संस्थापन कला का समकालीन भारतीय कला पर बढ़ता प्रभाव

ज्योति
शोधार्थी, यूजीसी नेट (ललितकला विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेल:*jyotiartist127@gmail.com3@gmail.com*

डॉ. रीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, (ललितकला विभाग)
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 20-11-25
Approved: 05-12-25

ज्योति
डॉ. रीता सिंह

संस्थापन कला का समकालीन भारतीय कला पर बढ़ता प्रभाव

Artistic Narration 2025,
Vol. XVI, No. 2,
Article No.30 Pg. 212-216

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2025-vol-xvi-no2

Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.030*

सारांश

पिछले कुछ दशकों में समकालीन भारतीय कला परिदृश्य में संस्थापन कला के प्रति उल्लेखनीय परिवर्तन आये हैं, इसे संस्थापन या अधिष्ठापन नाम से भी जाना जाता है। अधिष्ठापन कला की निर्मिती में सब तरह की प्राकृतिक व मानव निर्मित वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि मिट्टी, कपड़ा, पत्थर, यंत्र के पुर्जे, प्लेक्सिग्लास आदि। समकालीन समय के विभिन्न कलाकार सुबोध गुप्ता, विवान सुन्दरम्, विभोर सोंगनी, दीपिका गौतम, गोपाल नाम जोशी आदि ने संस्थापन कला में अपने नवीनमेशी दृष्टिकोण से कला को अलग पहचान दे रहे हैं। प्रगति के बढ़ते दौर में भारत सरकार भी संस्थापन कला को प्रकाशनीय व उल्लेखनीय बनाने का प्रयास कर रही है।

मुख्य शब्द

प्रदर्शनी कला, इंस्टॉलेशन आर्ट, काव्यात्मक, विचारप्रधान, दर्शनिक कला, क्रियात्मकता, अभिव्यक्ति

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.030

संस्थापन कला के विषय पर अध्ययन करने से पूर्व हमें जानना होगा कि ''कला क्या है?'' सुनने में तो यह प्रश्न बहुत सरल लगता है, लेकिन कला शब्द को अनेक प्रकार के मानवीय क्रिया–कलापों के लिए बिना किसी विशेष परिभाषा के उपयोग में लाया जाता रहा है। इनमें से एक है– ''संस्थापन कला''। संस्थापन कला का अर्थ है वह कला जो अपने प्रस्तुतिकरण के स्थान पर निर्मित या स्थापित की जाए। संस्थापन कला के जन्मदाता विचारक कलाकार मार्शल धुशा को माना जाता है। मार्शल धुशा ने अपनी कला में बनी बनाई वस्तुओ का प्रयोग कर एक नवीन संस्थापन कला को प्रकाश में लाया है। संस्थापन कला में पुराने या प्रचलित हो चुके माध्यमों को एक नए अर्थ में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन कालांतर में यह चित्रकला, मूर्तिकला, कोलाज, फोटोग्राफी जैसे कई वस्तुओं का सम्मेलन बन गया है। जो आजकल की संस्थागत कला में गहरे प्रभाव और प्रयोग के साथ सामने आ रहा है। यही नहीं, इसे देखने वाले कला समीक्षक भी इसमें हिस्सा लेते हैं।

संयोजन की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु का नाम संस्थापन कला है। समकालीन इतिहास में उस अवधि के बारे में बताया गया है जो आज के लिए एक नए प्रगतिशील चरण के रूप में कार्य कर रही है तथा समकालीन कला को कलाकार विभिन्न प्रयोगों द्वारा नई दिशा देने का कार्य कर रहे हैं। यह कलाकारों की नई खोजों का ही परिणाम है कि कला के क्षेत्र में बहुत सी नई विधाएँ सामने आई हैं। ये विधाएँ विभिन्न प्रकार के अर्थों और सोच के साथ जन्मी हैं। कलाकार ने अपने भावों को एक संगठित रूप में प्रस्तुत कर कहीं इसे प्रदर्शित किया है।

कला के सबसे नए आयामों में जहाँ संस्थापन कला है, वही ग्राफिक कला बाज़ार में नए रोज़गार के अवसर लेकर आई है। समकालीन कलाकार परंपरागत कला के प्रति आस्था रखते हुए अपने भविष्य के प्रति भी जागरूक और प्रतिबद्ध हो गए हैं। उनकी कृतियों में आज की परिवर्तित और व्यावसायिक परिस्थितियों का समावेश दिखाई पड़ता है। समकालीन कलाकारों के बारे में पढ़ते हुए, मैंने देखा कि बहुत से कलाकार इंस्टॉलेशन आर्ट को अपना चुके हैं, जो एक सामान्य जन–संदेश वाली कला है।

विश्व के आधुनिक कला इतिहास में बीसवीं शताब्दी का प्रारंभिक दशक रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ा रहा। यूरोप में बीसवीं शताब्दी में मूर्तिकला कला के मूलभूत तत्वों को लेकर इंस्टॉलेशन आर्ट दृश्यात्मक रूप में उभर कर आया। इंस्टॉलेशन अर्थात् स्थापित करना। इस कला को हिंदी भाषा में संस्थापन कला कहा जाता है।

इस कला में रंग, रूप, प्रस्तुतियाँ, कविता और घटना आदि के भावनात्मक तत्वों को एकत्रित कर निर्माण किया जाता है। यह कला क्षणभंगुर और अस्थायी हो सकती है, जिसे दृश्य–प्रस्तुतियों और प्रदर्शन चित्रों के माध्यम से स्थापित किया जाता है। इसमें काव्यात्मक, विचारप्रधान, दर्शनिक कला आदि तत्वों का भी समावेश रहता है। इसका उद्देश्य धार्मिक, आध्यात्मिक अनुभव या मात्र मनोरंजन भी हो सकता है। इस कला में क्रियात्मकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्थापत्य और मूर्तिकला कला से संबंध रखने वाली यह कला उपयोगकर्ता के विपरीत नष्ट किए जा सकने वाले पदार्थों के प्रयोग से एक नई व्याख्या को व्यक्त करती है।

ज्योति, डॉ. रीता सिंह

इंस्टॉलेशन कला में अस्थायित्व और समायिकता के कारण कुछ सीमाएँ भी हैं। भारत में इंस्टॉलेशन कला को लगभग पिछले चार दशकों से अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है। भारत में प्राचीन पारंपरिक स्थापत्य कला जैसे लोक कला, धार्मिक और सांस्कृतिक रूपांतरणों के रूप में एक भिन्न अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के रूप में दुर्गा अष्टमी पर दुर्गा प्रतिमा की सज्जा व रावण के प्रतिबिंब का निर्माण, सांझी कला बनाना एवं मोहर्रम के अवसर पर ताजियों का निर्माण आदि किसी उद्देश्य को लेकर कला की रचना की जाती है और उद्देश्य पूर्ण होने पर उन्हें नष्ट कर दिया जाता है। लेकिन समकालीन कला में पूर्णतः व्यक्तिगत अभिव्यक्तित्व के रूप में इंस्टॉलेशन कला की विशेष और भिन्न परंपरा है।

भारत में यह कला 1990 ई0 में श्री नेक चंद्र द्वारा चंडीगढ़ में नष्ट किए जा सकने वाले पदार्थों द्वारा रॉक गार्डन के निर्माण के साथ प्रस्तुत की गई। यह इंस्टॉलेशन स्थापित कला है। इसी प्रकार का एक उदाहरण सुरेंद्र पाल जोशी (राजस्थान) ने उत्तराखंड में हुई आपदा को लेकर केदारनाथ मंदिर के विषय में एक इंस्टालेशन तैयार किया है।

आज समकालीन कला में अनेक ऐसे कलाकार हैं जो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जैसे कि विवान सुंदरम, वेद नायर, सुबोध गुप्ता, भारती खेर और नवीन कलाकार चारुवी अग्रवाल, विभोर सोगनी, कांति परमार, दीपिका गौतम, गोपाल नाम जोशी आदि समकालीन कलाकारों में प्रख्यात नाम है ऐसी कई भारतीय कलाकार इंस्टॉलेशन कला–प्रक्रिया से जुड़ी हुई कलाभिव्यक्तियों का निर्माण कर रहे हैं।समकालीन कला में इंस्टॉलेशन आर्ट पर अनेक कलाकार अपना नया माध्यम लेकर कार्य कर रहे हैं। जैसे– ''सुबोध गुप्ता का माध्यम बर्तन'' है। जो सभी के घरों में मिल जाता है। जिससे देखकर हर कोई कह सकता है कि ये तो मेरे घर का बर्तन है। जब मै अपने खोज अध्याय के तहत नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट गई और वहाँ पर अंदर गई तब स्टील जैसी चमकती हुई रोशनी मेरे फेस पर लगी, मैंने जब उसे मुड़कर देखा तो वह इंस्टॉलेशन स्टील बर्तनों का बना एक पेड़ था। जो इंस्टॉलेशन आर्ट के प्रसिद्ध कलाकार ''सुबोध गुप्ता'' का आर्ट वर्क था। इसे देखकर मैं अपने–आप को रोक नहीं पाई। तुरंत उस पेड़ के पास गई, उसे स्पर्श किया और देखा कि यह कितना विशाल था। उसमें चम्मच, ग्लास ,बाल्टी, घर के लगभग सभी बर्तनों का उसमें प्रयोग हुआ था। सुबोध गुप्ता की कला का दृष्टिकोण बिल्कुल नया और जन–जन को अपनी कला से जोड़ने वाला है। यही तो संस्थापन कला की पहचान है। एक साधारण व्यक्ति भी इस संस्थापन कला से जुड़ सकता है। इंस्टॉलेशन आर्ट हर व्यक्ति को यह अहसास दिलाता है कि वह भी इस कला से दूर नहीं है। वह भी इस कला का एक हिस्सा ही है।

समकालीन कला में ऐसे अनेक कलाकार हैं, जो संस्थापन कला में अपना अलग माध्यम लेकर अपनी अलग पहचान बना रहे हैं। जैसे– सुबोध गुप्ता ने आम आदमी का बर्तन लेकर कलात्मक रूप दिया, उसी प्रकार भारती खेर ने भी नारी जाति का पारंपरिक प्रतीक बिंदी को लेकर कार्य किया। जो संस्थापन कला में अपनी अलग पहचान बना रही हैं। 'एक साधारण उपयोग की सौंदर्य की वस्तु बिंदी से भी क्या कोई कलाकृति बन सकती है? यह ख्याल अचानक की हर किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में आ ही जाता है। भारती

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i02.030

खेर इसे शिव की तीसरी आंख का प्रतीक मानती है, जो भारत में पारंपरिक रूप से माथे पर लगाई जाने वाली बिंदी है।उसी प्रकार वेद नायर ने भी पत्थर को लेकर कार्य किया और एक उत्कृष्ट संस्थापन बनाया है। उन्होंने कल्पवृक्ष को लेकर भी कार्य किया जो धार्मिक प्रतीक हैं। वेद नायर ने अपने कार्य में देवी देवताओं की छवियों में सुनहरे प्लास्टिक हरे रंग का का उपयोग किया है। वेद नायर को जंगल से गहरा लगाव है। जो उनके ''इंस्टॉलेशन डिसपेयर एंड होप ऑफ कल्पसूत्र'' में देखा जा सकता है।

इंस्टालेशन आर्ट में एक माध्यम सीमित नहीं है। इसमें पेंटिंग, फिल्म, फोटोग्राफी, डिजिटल आर्ट, म्यूजिकल आदि अनेक प्रयोग के माध्यमों को जोड़कर कार्य किया जाता है। ऐसे अनेक कलाकार हैं जो विभिन्न माध्यमों में कार्य करने के बाद संस्थापन कला में अपनी पहचान बना रहे है जैसे– गोगी सरोज पाल, रत्नावली कान्त, नलिनी मलानी, अनीश कपूर आदि अनेक कलाकार हैं जो संस्थापन कला को अपनाए हुए हैं नवीन कलाकारों में देखा जाए तो मुझे भारत मंडपम के प्रांगण में अनेक इंस्टालेशन दिखाई दिए। जो नवीन कलाकारों के हैं जैसे चारुवी अग्रवाल, कांति परमार, दीपिका गौतम, विभोर सोगानी आदि कलाकार।

संस्थापन कला के नये कलाकारों और उनके माध्यमों की खोज मुझे 'वडोरा आर्ट गैलरी, नई दिल्ली' में लेकर गई, जहाँ पर प्रकाशित मैगज़ीन में मुझे विवान सुंदरम जी का कार्य देखने को मिला। विवान सुंदरम ने संस्थापन कला को एक नई पहचान दी है।

विवान सुंदरम का जन्म 28 मई 1943 को शिमला में मशहूर शेरगिल के कला स्टूडियो में हुआ था। अमृता शेरगिल विवान सुंदरम की मौसी थीं। विवान सुंदरम की कला के क्षेत्र में अपनी अच्छी पकड़ थी। वे डॉक्टरों के उपयोग किए गए गाउन, ग्लव्स से भी रंग–बिरंगे ड्रेस बना सकते हैं। विवान सुंदरम जनजीवन की आम सामग्री को ऐसी सामर्थ्यात्मक आकर्षक कृति में बदल देते हैं, जिससे साधारण मनुष्य सोचता है इसका कुछ नहीं हो सकता। ऐसे माध्यमों को लेकर विवान सुंदरम अपने विचारों से कल्पनाशक्ति से नई संस्थापन कला की दृष्टि देते हैं, जिससे देखने वाले को सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि क्या इससे यह भी बन सकता है?

विवान सुंदरम के शब्दों में "अहम बात यह है कि हम कौन–सी कला रच रहे हैं।" विवान सुंदरम कि ज्यादातर पेंटिंग आकृति मूलक है। भारत के श्रेष्ठ इंस्टालेशन आर्टिस्ट जो आज हमारे बीच नहीं रहे। 29 मार्च 2023, नई दिल्ली में 79 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। विवान सुंदरम जी, देश के स्तरीय कलाकार थे जिन्होंने संस्थापन कला (इंस्टालेशन आर्ट) की भारतीय कला पटल पर छवि दिखाई। जिसका अनुसरण आज अनेक कलाकार कर रहे हैं। अपनी विवेचनात्मक कला से नया संस्थापन संवाद कर रहे हैं।

समकालीन भारतीय कला परिदृश्य में संस्थापन कला में आए उल्लेखनीय परिवर्तनों में कलाकार बहती गंगा में अपना हाथ धो रहा है। संस्थापन कला में कलाकार अपने नवोन्मेषि दृष्टिकोण के साथ अपनी अलग पहचान बना रहे है। संस्थापन कला में समृद्ध संस्कृति विरासत से प्रेरणा लेकर समकालीन कला के ऐसे कई वैश्विक मुद्दों को संबोधित किया जाता रहा हैं,जो चुनौती देते हैं, प्रेरणा देते हैं और विचारों को उद्देलित करते हैं। यह एक आकर्षण का विषय है, जिसके प्रति कलाकारो की बढ़ती रुचि हमें संस्थापन कला में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रगति की बढ़ती दौर में भारत सरकार भी संस्थापन कला को प्रकाशमय व उल्लेखनीय बनाने का प्रयास कर रही हैं।

संदर्भ

1. मागो डॉ0 प्राण नाथ (2006), भारत की समकालीन कला (एक परिप्रेक्ष्य) अनुवाद सौमित्र मोहन, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडियन इंडिया पृ0 सं0–02,03
2. रानी डॉ0 रेनू (2018) समकालीन कला में संस्थापन (इंस्टॉलेशन) कला पर एक समीक्षात्मक अध्ययन (दिल्ली क्षेत्र के संदर्भ में)शोध प्रबंध पृ0 सं0–1,35
3. कला दीर्घा, अक्टूबर 2007 वर्ष 8 अंक 15, पृ0 सं0–33
4. जोशी, डॉ0 ज्योतिष, समकालीन कला अंक 46–47, पृ0 सं0–65–67
5. कला दीर्घा, अप्रैल 2006, अंक 12, पृ0 सं0–09
6. कला दीर्घा, अक्टूबर 2007, वर्ष 8 अंक 15 पृ0 सं0–34–35
7. The Art Newspaper न्यूज़ पेपर – टाइम्स ऑफ इंडिया